राजनीतिक आकाओं का संरक्षण...बना लो दुकानें

फरीदाबाद में अवैध निर्माण की बाढ़, अफसरों ने बचाव का रास्ता खोजा

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: शहर में आम नागरिक अगर अपने घर की बाउंड्री भी बनवाता है तो एमसीएफ के बिल्डिंग इंस्पेक्टर कार्रवाई के लिए फौरन पहुंच जाते हैं लेकिन राजनीतिक संरक्षण में अगर दुकानें बन रही हों तो उसे एमसीएफ बन्द नहीं करवा सकता। लेकिन एनआईटी 5 के ई ब्लॉक में ऐसी ही एक घटना जरा गंभीर हो गई है और मामला आने वाले समय में तूल पकड़ सकता है। एमसीएफ में इससे संबंधित फाइल पर दर्ज हो गया है कि इस मामले में कार्रवाई को राजनीतिक दखल पर रोका गया।

सीमा त्रिखा की भूमिका

जानकारी के मुताबिक एनआईटी 5 नंबर के ई ब्लॉक में छह दुकानों का निर्माण किया जा रहा था। एमसीएफ में शिकायत पहुंची तो संयुक्त आयुक्त प्रशांत अटकान के निर्देश पर एमसीएफ कर्मी उन दुकानों को सील करने जा पहुंचे। बताया जाता है कि बिना नक्शा पास कराये अवैध ढंग से दुकानें बना रहे शख्स ने क्षेत्र की भाजपा विधायक सीमा त्रिखा को फोन कर बुला लिया। सीमा त्रिखा को भी यह मामला इतना गंभीर लगा कि वह फौरन मौके पर एमसीएफ कर्मचारियों को रोकने जा पहुंची। बताया जाता है कि विधायक ने कर्मचारियों को उन दुकानों पर एक्शन लेने से रोक दिया और उन्हें जमकर लताड़ भी लगाई। इसके बाद विधायक ने निगम कमिश्नर से बात की और मामला शांत हो गया। शहर में इस मामले में सीमा त्रिखा की भूमिका को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं है। जिनके बारे में मशहूर है कि वह कई भी मुफ्त में जाकर नहीं खड़ी होती।

फाइलों में दर्ज हो गया

अवैध दुकानों को सील करने गया अमला वापस आ गया। लेकिन सूत्रों ने बताया कि संयुक्त आयुक्त ने इससे संबंधित फाइल पर जबरदस्त टिप्पणी कर दी है। उन्होंने फाइल पर दर्ज कर दिया है कि राजनीतिक हस्तक्षेप पर कार्रवाई रोकी गई। हालांकि उसमें किस नेता या विधायक ने उस कार्रवाई को रोका, उसका नाम नहीं है। संयुक्त आयुक्त की हिम्मत भी नहीं है कि व किसी नेता व विधायक का नाम फाईल पर दर्ज कर पाते। समझा जाता है कि संयुक्त आयुक्त ने एमसीएफ अफसरों के बचाव में इस टिप्पणी को फाइल पर अंकित किया है। क्योंकि पूरे शहर में जिस तरह तमाम भाजपा नेता, विधायक, मंत्री अवैध निर्माणों को बढ़ावा दे रहे हैं, यह मामला जल्द ही हाई कोर्ट में पहुंचेगा। ऐसे में एमसीएफ अफसरों ने अपने बचाव की पूरी तैयारी कर रखी है।

बड़खल मोड़ चौराहे पर किसके संरक्षण में है ये इमारत

बडखल मोड़ चौराहे के कोने पर एक बिल्डिंग एमसीएफ, जिला प्रशासन और एनएचएआई को खुले आम मुंह चिढ़ा रही है। इसी दुकान की वजह से बडखल चौराहे पर सेक्टर 19, 28, 29 की तरफ बाएं से जाते समय हर वक्त जाम लगा रहता है। इस बिल्डिंग में सबसे नीचे बीकानेर मिष्ठान भंडार, पहली मंजिल पर ओयो गेस्ट हाउस और दूसरी मंजिल पर कालका प्रॉपर्टीज के नाम से दफ्तर है। बिल्डिंग बडखल मोड के कोने पर होने की वजह से इसमें दोनों तरफ से प्रवेश किया जा सकता है यानी मथुरा रोड और सेक्टर 19, 28,29 की ओर से आ रही रोड पर बने गेट से भी जाया जा सकता है।

इस बिल्डिंग मालिक ने बाईं तरफ कोने पर इसका निर्माण इस ढंग से किया है कि बाईं तरफ से मथुरा रोड पर मुड़ने के लिए ज्यादा जगह नहीं बची है। आये दिन इस बिल्डिंग में आने वाले लोग जब अपनी गाड़ी सड़क पर और कोने पर खड़ी कर देते हैं तो बाईं तरफ मुड़ने का रास्ता ही बंद हो जाता है। इस वजह से यहां जाम लगा रहता है। पहले यह स्थिति नहीं थी। बिल्डिंग मालिक ने पहले कोने पर आगे तक जगह घेरने की हिम्मत नहीं जुटाई थी। पिछले छह साल में उसने इस जगह पर अपना कब्जा सा कर लिया है। कुछ महीने पहले एक पार्षद ने इस रोड पर बनी और बन रही दुकानों को लेकर शिकायत की थी। नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) के ओल्ड फरीदाबाद दफ्तर ने यहां मात्र तीन दुकानें सील कर अपना कर्तव्य पूरा कर लिया। कुछ दुकानों को नोटिस जरूर दिए गए लेकिन बडखल मोड की इस बिल्डिंग की तरफ एमसीएफ ने आंख उठाकर भी नहीं देखा। एमसीएफ के पास इस बिल्डिंग की कोई फाइल ही नहीं है, जिसमें कोई नोटिस दर्ज किया गया हो। एमसीएफ के सूत्रों का कहना है कि इस बिल्डिंग के मालिक को सत्तारूढ़ पार्टी के एक बड़े नेता का संरक्षण मिला हुआ है। इसलिए एमसीएफ इस बिल्डिंग पर हाथ डालने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। बिल्डिंग मालिक आये दिन इस चौराहे पर तमाम भाजपा नेताओं और मंत्रियों के सम्मान में बोर्ड लगवाता रहता है और इस तरह उनकी आड़ में अपनी बिल्डिंग बचा रखी है। इससे पहले यह बिल्डिंग मालिक कांग्रेस नेताओं की शरण में रहकर अपनी बिल्डिंग की रक्षा करता था। लेकिन उस समय इस बिल्डिंग ने सरकारी जमीन पर इतनी जगह भी नहीं घेर रखी थी और आने-जाने वालों को कोई दिक्कत नहीं थी।

लेकिन पिछले छह साल से हालात बदल गए। बिल्डिंग मालिक ने काफी पैसा लगाकर इस बिल्डिंग को रेनोवेट कराया है और साथ ही सरकारी जमीन पर अपना कब्जा भी बढ़ा लिया है। लेकिन एनएचएआई क्यों मौन है ये रहस्य खुलना बाकी है।

एमसीएफ को खुलवानी पड़ी बैंक की बंद शाखा

मजदूर मोर्चा में प्रकाशित खबर का असर

एमसीएफ ने बैंक पर लगाया ताला, ये किस अफसर का है खेल

सौ रूपये लीज पर दी थी जगह, अब एक करोड़ की देनदारी निकाली

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद : नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) के मुख्यालय में सिंडिकेट बैंक (अब केनरा बैंक) पर नगर निगम ने ताला लगा दिया है। नगर निगम ने यह कार्रवाई प्रॉपर्टी टैक्स जमा न कराने और अन्य राशि के बकाया होने पर की है। इस कार्रवाई से सभी जमाना परेशान एमसीएफ के कर्मचारी हैं, क्योंकि उनको बैंक लेने के लेकर बैंक निकालने और अन्य छोटी छोटी जरूरतों के लिए इसी ब्रांच में जाना पड़ता है। शेष पेज दो पर

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) के मुख्यालय में सिंडिकेट बैंक (अब केनरा बैंक) की शाखा फिर से खुल गई है। मजदूर मोर्चा के पिछले अंक में प्रकाशित खबर का संज्ञान लेते हुए कमिश्नर ने इस बैंक को फिर से खोलने का निर्देश दिया। इसके बाद यह ब्रांच सोमवार से फिर से काम करने लगी। बैंक पर किराया, बिजली, पानी का बकाया था, इस वजह से एमसीएफ ने एक करोड़ रुपये की देनदारी बैंक पर निकाली थी। जमा न कराये जाने पर पिछले हफ्ते बैंक की शाखा पर ताला लगा दिया गया। इससे एमसीएफ के कर्मचारियों को काफी दिक्कत आई। लेकिन बैंक की शाखा खुलने के बाद एमसीएफ कर्मचारी खुश नजर आये और मजदूर मोर्चा का इस मामले को उठाने के लिए शुक्रिया अदा किया।

एमसीएफ के अंदर रस्साकशी

एमसीएफ में इन दिनों जबरदस्त रस्साकशी चल रही है। यह घटना उसी का नतीजा है। सूत्रों ने बताया कि निगम कमिश्नर यश गर्ग ने बकाया वसूली के निर्देश दे रखे हैं और बकाया न देने वालों पर कार्रवाई को भी कहा है। इसी क्रम में प्रॉपर्टी टैक्स का काम देख रहे ज्वाइंट कमिश्नर प्रशांत अटकान ने बैंक को भी नोटिस जारी कर दिया। चूंकि ऐसी नोटिस में संबंधित पार्टी को समय दिया जाता है कि वह निश्चित समय में बकाया पैसा जमा कराये और जमा न कराने पर एक्शन का अधिकार एमसीएफ के पास होता है। जब बैंक ने बकाया देने में आनाकाना की तो ज्वाइंट कमिश्नर के निर्देश पर प्रॉपर्टी टैक्स विभाग ने बैंक की शाखा पर ताला लगा दिया गया। हालांकि सूत्रों का कहना है कि बैंक के कुछ अधिकारियों ने इस मामले में ज्वाइंट कमिश्नर की व्यक्तिगत रुचि बताई लेकिन प्रॉपर्टी टैक्स विभाग के सूत्रों का कहना है कि हमें आला अफसरों से जो निर्देश मिला, हमने उसका पालन किया। इसमें किसी की व्यक्तिगत रुचि का सवाल कहां उठता है।

ज्वाइंट कमिश्नर का इन्कार

एमसीएफ के भरोसेमंद सूत्रों ने बताया कि मजदूर मोर्चा में खबर प्रकाशित होने के बाद नगर निगम कमिश्नर यश गर्ग ने ज्वाइंट कमिश्नर से बैंक की शाखा को डी-सील करने या खोलने को कहा तो बताया जाता है कि उन्होंने इनकार कर दिया। उन्होंने कमिश्नर को तर्क दिया कि आपके निर्देश पर कार्रवाई की गई है। ऐसे में अब इसे डी-सील करना उपयुक्त नहीं होगा। लेकिन मीडिया और कर्मचारियों के दबाव पर अपनी गर्दन फंसती देखकर कमिश्नर ने प्रॉपर्टी टैक्स विभाग के कर्मचारियों से बैंक की सील खुलवा दी। अगले ही दिन ब्रांच फिर से काम करने लगी। यह अभी तक रहस्य बना हुआ है कि कमिश्नर के निर्देश पर जब यह एक्शन हुआ तो कमिश्नर बाद में अखबार में खबर छपने के बाद पीछे कैसे हट गए।

मामले की फाइल कहां है

एमसीएफ के मुख्यालय में स्थित सिंडिकेट बैंक की इस शाखा को यह जगह सौ रुपये लीज पर दी गई है। लेकिन इससे संबंधित फाइल नगर निगम के टैक्स विभाग में तलाश करने पर भी नहीं मिल रही है। सूत्रों ने बताया कि बैंक को बकाया वसूली का नोटिस भेजे जाते समय और अब इसकी सील खुलवाते समय निगम कमिश्नर यश गर्ग ने एक बार भी इससे संबंधित फाइल देखने की जहमत नहीं उठाई। सैकड़ों कर्मचारियों से जुड़े इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया गया।

अगर वाकई इस जगह को सौ रुपये लीज पर दिया गया था तो निगम कमिश्नर लीज की डीड या एग्रीमेंट को बदलकर किराया बढ़वा सकते हैं और नई शर्तें भी लगा सकते हैं। जाहिर है कि सख्ती करने पर बैंक अपनी शाखा यहां से हटा लेगा। ऐसे में नगर निगम को ही कोई रास्ता निकालना पड़ेगा। क्योंकि बैंक को एमसीएफ मुख्यालय में अपनी ब्रांच खोलने का अनुरोध नगर निगम की ओर से किया गया था। कमिश्नर को चाहिए को वो इस मामले की फाइल को पढ़कर निर्णय लें।

नाटक करने में माहिर खट्टर के नेता भी, अधिकारी भी

फरीदाबाद (ममो) बीते 7 दिसम्बर को सैक्टर 8-9 की डिवाइडिंग सड़क पर स्थित ईएसआई अस्पताल के ठीक सामने एमसीएफ के अधिकारियों और विधायक नरेन्द्र गुप्ता के लग्गों, भग्गों की भीड़ एक जेसीबी मशीन, गेंदे की मालाएं एक नारियल और कलाकंद व् लड्डू के डिब्बों के साथ खड़ी थी। पता चला कि विधायक नरेन्द्र गुप्ता के करकमलों से सड़क किनारे ड्रेनेज लाइन डालने का काम होने शुरू होने जा रहा है जिसका उद्घाटन विधायक जी करेंगे।

गुप्ता के आते ही लग्गे भग्गों में माला पहनाने की होड़ लगी और फोटो खिचवाने का दौर समाप्त होने के बाद विधायक जी ने देखा कि जहाँ पाइप डालनी है वहां पर तो पाइपों का ढेर लगवा रखा है सो खुदाई कहाँ की जाएगी। इस शंका का समाधान एसडीओ से माँगा गया सो उन्होंने तुरंत सड़क की तरफ इशारा करते हुए कहा कि यही कर देते हैं सर। विधायक जी को बात जंची नहीं और बोले यहाँ तो सड़क है यहाँ खुदाई करने से फिर भविष्य में सड़क को चौड़ा कैसे करेंगे। इस विकट स्थिति में जेसीबी पर बैठे ड्राइवर के हाथ-पांव नयी मशीन से बस गड्ढा खोद देने के लिए कुलबुला रहे थे। भीड़ से विधायक के चमचों ने सलाह देनी शुरू की। किसी ने दक्षिण छोर पर खोदने को कहा तो किसी ने उत्तर। काफी मशक्कत के बाद तय हुआ कि बिल्कुल सड़क के किनारे खोदा जाए।

जेसीबी के गेयर पर हाथ की खुजली मिटाने ड्राईवर ने इशारा पाते ही मशीन का पंजा सड़क किनारे मिट्टी में धंसा दिया, मीडिया को देख भरपूर जोश में आये जेसीबी ऑपरेटर ने दो तीन बार में ही 6 फीट गड्ढा खोद दिया लेकिन अचानक सबको पता चला कि अरे- अरे यहाँ तो एक पाइप पहले से ही है।

विधायक ने एसडीओ को फिर पूछा अब क्या किया जाए, इससे पहले कि एसडीओ जवाब दें चमचों ने सलाह पेल दी। कहा, थोडा पाइप के किनारे करके खोद लेते हैं। जेसीबी ऑपरेटर ने मशीन को पूरे जोश से चलाया और सड़क पर खड़े पेड़ जो गड्ढे बनाने में अड़ रहा था को उखाड़ फेका। इस तरह एन सड़क किनारे गड्ढा तैयार, पर इसकी खासियत थी कि सड़क में पहले से पड़े सैकड़ों गड्ढों से ये काफी बड़ा है, जिसकी माप देखने के लिए एक 5 फीट के आदमी को गड्ढे में उतारा गया। मीडिया में फोटो आने के जोश में आदमी गड्ढे में कूद पड़ा। मिठाइयाँ बंटी, नारियल फूटा, पानी पी कर बोतलें सड़क किनारे फेंकी गईं और हो गया काम पूरा। लड्डू खा कर हाथ साफ करती भीड़ से पूछा गया कि क्या हो रहा है यहाँ, एक ने कहा हमे का पता भईया कि का हो रौ है, दूसरे ने कहा, भाई यू धरे पैप, जे पैपन ने सड़क भीतर डारबे खातर गड्ढा खुदैगो। तीसरे ने कहा ड्रेनेज पाइप डाली जा रही हैं। पर पाइप तो पहले से डाली हुई थीं, जवाब मिला, भाई जाम हो गई वो तो कबकी इसलिए अब नयी डाल रहे हैं, विधायक जी की वजह से ही हो पा रहा है ये काम।

एक समझदार ने कहा, पाइप नहीं डल रही, फोटो खिंचवाई जा रही है। एसडीओ को पता ही नहीं कहाँ पाइप रखवानी है और कहाँ खुदवानी है, विधायक के पास कोई रिपोर्ट ही नहीं, अन्य अधिकारी बिना होमवर्क किये और बिना कोई नक्शा देखे बस नारियल और मिठाई पर जोर देकर आ गए। चमचों ने कहा यहाँ खोदो तो यहाँ खोद दिया विधायक कहेगा वहां खोदो तो वहां खोद देंगे।

अक्ल होती और काम करने की आदत तो कहाँ खुदेगा और कहाँ नहीं इसका ज्ञान अफसरों को होता पर क्योंकि उन्हें भी पता है कि नेता को फोटो खिचवानी है तो फिर खिंचवा दो फोटो। यानी जस राजा तस प्रजा।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06